अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व विज्ञ (वर्ष : 2021) दिनांक : 29-08-21

समय सीमा : 3 घंटा प्रथम वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

भगवती भाष्य (खण्ड-1)–70

प्र. 1 कोई छह पारिभाषिक शब्द लिखें– 6

(क) जीव के आन्तरिक अध्यवसायों में एक अव्यक्त आकांक्षा विद्यमान रहती है, वह.....है।

(ख) एक ही गति में जीव के अवस्थान की अवधि?

(ग) जिस उत्पाद पर्याय के पीछे प्राणी का प्रयत्न हो उसे..... ।

(घ) एक वस्तु में प्रकृति-भेद अथवा संख्या भेद से होने वाला विकल्प?

(ङ) पूर्व वैक्रिय-शरीर की अपेक्षा उत्तरकाल में निर्मित वैक्रिय शरीर?

(च) जीव आन, अपान तथा उच्छ्वास और निश्वास करता है इसलिए ..... कहलाता है।

(छ) धार्मिक आराधना के फल के विषय में सन्देह से मुक्त?

(ज) उत्थान आदि क्रिया के लिए होने वाला जीव परिणाम?

प्र. 2 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें– 6

(क) नंदी सूत्र में अक्षर के कितने व कौन से प्रकार बतलाए गए हैं?

(ख) 'चलमाणे चलिए' आदि नव पद में उत्पाद-पर्याय तथा व्यय-पर्याय की अपेक्षा से कितने-कितने पद हैं?

(ग) मोहकाल की उपशम अवस्था में उपस्थान किसका होता है व अपक्रमण करने वाला क्या बनता है?

(घ) रत्नप्रभा के नैरयिकों में उत्पत्ति का विरह काल कितना है और वहां इसके कारण कितने भंग बनेंगे?

(ङ) प्राणातिपात आदि क्रियायें व्याघात होने पर कितनी दिशाओं में स्पृष्ट होती हैं?

(च) 'देसं उवरमइ, देसं पच्चक्खाइ'–इस सूत्र का अर्थ बताएं।

(छ) श्वास वायु से क्या तात्पर्य है?

(ज) सिद्ध अन्योन्य समवगाढ़ किस प्रकार होते हैं?

प्र. 3 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दें– 30

(क) बस्ती के बारह प्रकारों के नाम बताते हुए किसी एक का अर्थ लिखें।

(ख) दर्शन मोह व ज्ञान मोह के वेदन को स्पष्ट करें।

(ग) शिष्टाचार के पांचों अंगों के नाम व अर्थ लिखें।

(घ) बालमरण व पंडितमरण में मृत्यु की स्वतंत्रता का दुरूपयोग व सदुपयोग किस प्रकार होता है?

(ङ) वीरासन की विधि एवं प्रभाव बताएं।

(च) अनशन की विधि के चार अंग लिखें।

(छ) वेदना-समुद्घात का वर्णन करें।

(ज) वेद के तीनों अर्थों व उनके सम्बन्धों को बताएं।

(झ) पर्व तिथियों में हरी वनस्पति को खाने का वर्जन क्यों किया गया है?

(ञ) स्थविरों द्वारा दिये गए स्वर्गोत्पत्ति के चार कारणों का वर्णन करें।

(ट) असुर कुमार राज चमर की राजधानी कहां स्थित है? उसका नाम व लम्बाई-चौड़ाई कितनी है, बताएं।

प्र. 4 कोई तीन प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में 5 से 7 पंक्तियों में दें– 15

(क) परिणामीनित्यवाद के सिद्धान्त को स्पष्ट करें।

(ख) जन्म और आयुष्यवाद को विकल्पों के द्वारा स्पष्ट करें।

(ग) नैरयिक तथा पृथ्वीकायिक जीवों के नानात्व का यंत्र लिखें।

(घ) जीव और पुद्गल के परिभोक्ता और परिभोग्य सम्बन्ध को स्पष्ट करें।

प्र. 5 परसमय के चार वादों का वर्णन करें। ***'अथवा'*** 13

जैन दर्शन के अनुसार अस्तिकाय को व्याख्यायित करें।

झीणी चरचा–30

प्र. 6 कोई दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो पंक्ति में दें– 10

(क) भगवान ने शुभ लेश्या को आश्रव और निर्जरा क्यों कहा है?

(ख) कर्मों का क्षय छह में कौन? नौ में कौन?

(ग) आयुष्य कर्म को पुण्य क्यों कहा गया है?

(घ) वेदनीय कर्म का क्षय-निष्पन्न छह में कौन? नौ में कौन? तथा वेदनीय कर्म के क्षय होने से क्या होता है?

(ङ) ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय और अन्तराय कर्म का बन्ध, उदय और सत्ता किस गुणस्थान तक है?

(च) क्षायिक सम्यक्त्व वाला व्यक्ति यदि दसवें गुणस्थान में उपशम श्रेणी ले तो उसे कितने भाव प्राप्त होते हैं और किस प्रकार?

(छ) चौथे गुणस्थान में सम्यक्त्व की प्रधानता होने पर भी सम्यक्त्व संवर क्यों नहीं है?

(ज) धर्म कौन सा भाव और कौन सी आत्मा है तथा क्यों है?

(झ) आठ आत्माओं में कौन-सी आत्मा सावद्य और कौन-सी निरवद्य व क्यों?

(ञ) जहां उपयोग आत्मा है, वहां कितनी आत्माओं की नियमा और भजना है?

(ट) जीव सावद्य-निरवद्य तथा शाश्वत-अशाश्वत किस अपेक्षा से है?

प्र. 7 कोई तीन पद्यों का शब्दार्थ करें– 12

(क) तिण में पहिले तीजे सम्यक्त नहीं, चोथे सम्यक्त पिण न चारित्र।
पिण चारित्र-मोहणी कर्म नां, खयोपशम थी गुण पवित्र।।

(ख) दूजो गुणठाणो दोय भाव छै, खयोपशम भाव परिणामीको रे।
खयोपशम-समदृष्टि कही ते, वमतां पिण सम्यक्त गुण नीको रे।।

(ग) नां सावज नां निरवद, ऊजल-करणी लेखे कहियै।
असासतो त्रिहुं काल अपेक्षा, निपुण न्याय हिये लहियै।।

(घ) खायक-निपन सतरै पाप नो ते सहित रे,
अठारमो खायक-निपन संवर जाण रे।
अठारमो खायक-निपन एकलो रे,
नव में जीव संवर निर्जरा पिछाण रे।।

प्र. 8 ढाल 11 के अनुसार प्राणातिपात पापस्थान की प्रथम तीन भावों की अपेक्षा से छह में कौन? नौ में कौन तथा सावद्य-निरवद्य की चर्चा लिखें। ***'अथवा'*** 8
सिद्ध करें योग और लेश्या एक नहीं है।